P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन व उसके महत्वपूर्ण बिन्दु

विनोद कुमार
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,
सिरसा, हरियाणा, भारत

सारांश

सतत् एवं व्यापक मूंल्याकन छात्रों की वृद्धि एवं विकास के सभी पक्षों/पहलुओं का नियमित आंकलन है अर्थात पाठ्य क्षेत्र, सह–पाठ्य क्षेत्र, व्यक्तित्व एवं सामाजिक गुणों का विकास है। शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का विकास करना। इसलिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का मुख्य बल शिक्षार्थी के सर्वांगीय विकास पर होता है इसमें शिक्षार्थी के शैक्षिक व सह शैक्षिक गतिविधियों दोनों को शामिल करता है इस प्रकार एक शिक्षार्थी का मूल्यांकन करते समय सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के विभिन्न महत्वपूर्ण बिन्दु/पहलुओं का ज्ञान होना बहुत ही जरूरी है जो बिन्दु मूल्यांकन करते समय प्रयोग किए जाते है। इस प्रकार इस शोध–पत्र में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के महत्वपूर्ण बिन्दु जैसे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ, उसके उद्देश्य, उसकी विशेषताएं, महत्वपूर्ण कार्य, आंकलन व उसके प्रकार, ग्रेडिंग प्रणाली व सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक इत्यादि क्षेत्रों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

मुख्य शब्द : CCE के उद्देश्य, कार्य, विशेषताएं, आंकलन, ग्रेडिंग, शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक क्षेत्र।

प्रस्तावना

निःशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के लागू होते ही सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (विद्यालय आधारित मूल्यांकन) को अपनाया गया। मूल्यांकन शैक्षणिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्णा अंग है जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया एवं विद्यार्थी की प्रगति के आंकलन के लिए महत्वपूर्ण है।

शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास के वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का महत्व और बढ़ जाता है। क्योंकि यह शिक्षार्थी के सामाजिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक, नैतिक, शारीरिक के साथ–साथ मानसिक विकास पर बल देता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षार्थी के सीखने में आनी वाली बाधाओं का निदान कर व उपचारत्मक उपायों की मांगे प्रशस्त करता है।

विभिन्न समितियों, आयोगों व नीतियों द्वारा भी समय–समय पर शिक्षार्थी के आंकलन, मूल्यांकन व परीक्षाओं में परिवर्तन कर उनको बेहतर बनाने की कोशिश की जाती रही है। परिवर्तन समय की मांग भी है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली बालक केन्द्रित शिक्षा पर बल देती है इसलिए भी सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रांसगिकता बढ़ जाती है क्योंकि यह बालकों को केन्द्र में रखकर उनके सर्वांगीण विकास पर बल देकर उनका व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्यांकन करता है।

सतत एवं व्यापक मूंल्याकन का अर्थ

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से तात्पर्य/अभिप्राय विद्यार्थियों के विद्यालय–आधारित मूल्यांकन की उस प्रक्रिया से है, जिसमें विद्यार्थी के विकास के सभी पहलुओं की ओर ध्यान दिया जाता है।

सतत् शब्द का अर्थ

यह शिक्षार्थी की 'संवृद्धि और विकास' के अभिज्ञात पहलुओं का मूल्यांकन एक घटना होने की बजाय एक सतत प्रक्रिया है जो पूरे शैक्षिक सत्र में चलती रहती है। इसमें निर्धारण की नियमितता, इकाई परीक्षण की आवृति, शिक्षा–प्राप्ति की कमियों का निदान, सुधारात्मक उपायों का उपयोग, पुनः परीक्षण, अध्यापकों व शिक्षार्थियों के लिए स्व–मूल्यांकन की प्रतिपुष्टि देना इत्यादि इसमें शामिल है।

व्यापक शब्द का अर्थ

यह शिक्षार्थी की संवृद्धि और विकास के शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को शामिल करने का प्रयास करता है। इसमें शिक्षार्थी की योग्यताएं, अभिवृत्तियाँ और अभिरूचियों इत्यादि को लिखित शब्दों से भिन्न रूप में प्रकट

करता है। व्यापक शब्द का अर्थ/अभिप्राय विभिन्न प्रकार के साधनों और तकनीको (परीक्षण और गैर–परीक्षण दोनों) के उपयोग से है।

इसका लक्ष्य अच्छे स्वास्थ्य, उपयुक्त कौशलों, वांछनीय गुणवता और शैक्षिक उत्कृष्टता वाले राष्ट्र के प्रति समर्पित अच्छे नागरिकों का निर्माण करना है।

मूंल्याकन का अर्थ

पाठ्यक्रम में निहित उद्देश्यों और मूल्यों की ओर विद्यार्थियों में प्रगति और अभिवृद्धि की परख एवं विद्यार्थी की प्रगति पर एकत्रित सूचना के आधार पर निर्णय करना। शिक्षा के उद्देश्यों, शैक्षणिक अनुभवों एवं मूंल्यकान में परस्पर घनिष्ठ संबंध है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य

1. शिक्षार्थी का मूल्यांकन उसी अध्यापक द्वारा हो जो उन्हे पढ़ाता/पढ़ा रहा हो।
2. मूल्यांकन को दैनिक जीवन की गतिविधियों/कार्यवाही/प्रतिक्रिया के साथ जोड़ा जाए।
3. मूल्यांकन रूचि पूर्ण एवं गतिविधियों पर आधारित हो ताकि छात्र/शिक्षार्थी ज्यादा से ज्यादा सीख सके।
4. किसी भी विद्यार्थी को एक ही कक्षा में न रोकना तथा यह सुनिश्चित करना, कि उसकी प्रारम्भिक शिक्षा (कक्षा 1 से 8 तक) पूरी करे।
5. शिक्षार्थी के मन से/मस्तिष्क से परीक्षा का भय/तनाव को कम करना।
6. शिक्षार्थी की जरूरत के समय निदानात्मक/उपचारात्मक शिक्षा का प्रबन्ध करना।
7. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना (NCF 2005) के अनुसार शिक्षार्थी के ऊपर से पाठ्यक्रम का बोझ कम करना।
8. निःशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार प्रत्येक शिक्षार्थी का संचयित अभिलेख रखना।
9. शिक्षण के दौरान मूल्यांकन प्रक्रिया व पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या के बीच सही समन्वय स्थापित करना।
10. शिक्षार्थी की उपलब्धियों और उनकी योग्यतानुसार उनको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की विशेषताएँ

1. सतत एवं व्यापक मूंल्याकन में 'सतत' और आवधिक पहलु का ध्यान रखा जाता है।
2. इसमें शिक्षार्थी का शिक्षा के प्रारम्भ में मूंल्याकन, शिक्षण प्रक्रिया के दौरान, मूंल्याकन की बहुतकनीकों का उपयोग करके अनौपाचारिक रूप से किया जाता है।
3. यह व्यापक आधारित है जिसमें शिक्षार्थी व उसके विकास के सभी पहलुओं को शामिल करता है।
4. व्यापक संघटक में विद्यार्थियों के विकास के शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक पहलुओं का निर्धारण शामिल है।
5. सतत एवं व्यापक मूंल्याकन में शैक्षिक पहलुओं में पाठ्यक्रम के क्षेत्र अथवा विषय–संबंधित क्षेत्र शामिल होते है जबकि सह–शैक्षिक पहलुओं में जीवन–कौशल, सह–पाठ्यचर्या, अभिवृत्तियाँ और मूल्यों आदि शामिल होते है।
6. शैक्षिक क्षेत्र में उपचारात्मक मूल्यांकन यूनिट/परीक्षा को समाप्त होने पर किया जाता है। तथा उपचारात्मक परीक्षणों का उपयोग करते हुए पुनः परीक्षण किए जाते है।
7. सह–शैक्षिक क्षेत्रों का मूंल्याकन बहुतकनीकों के आधार पर किया जाता है।

सतत एवं व्यापक मूंल्याकन के महत्वपूर्ण कार्य

1. यह अध्यापक को प्रभावशाली शिक्षण को साथ प्रभावकारी कार्य नीतियों को बनाने एवं आयोजित करने में सहायता करता है।
2. यह शिक्षार्थी की प्रगति की सीमा और मात्रा को नियमित रूप से आंकने में सहायता करता है या देता है।
3. यह अध्यापकों को शिक्षार्थी की कमजोरियों, शक्तियों व आवश्यकताओं का पता लगाने में सहायक है।
4. यह बच्चों में अध्ययन की अच्छी आदतें विकसित करने, गलितयों को सुधारने तथा लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित करता है।
5. यह शिक्षार्थी की अभिरूचियों और प्रवृतियों वाले क्षेत्र की पहचान करता है तथा उनमें होने वाले परिवर्तन का पता लगाने में सहायता करता है।
6. यह शिक्षार्थी से संबंधित रिकार्ड/सूचना प्राप्ति के आधार पर उनकी भविष्यवाणी करने में सहायता करता है।
7. यह समय–समय पर माता–पिता या अभिभावकों को परिणाम को प्रति जागरूक करने में सहायता करता है।

इस प्रकार यह शिक्षार्थी, माता–पिता व अध्यापक के साथ–साथ देश की प्रगति/उन्नति में बहुत महत्वपूर्ण है।

सतत एवं व्यापक मूंल्याकन में आंकलन

आंकलन

साधारण भाषा में आंकलन का अर्थ है ''पास बैठना एवं आवलोकन करना'' "Sit beside and observe" यदि बात कक्षा की, की जाए तो'' पाठ्यक्रम से संबंधित विद्यार्थी की प्रगति एवं उपलब्धियों की जानकारी एकत्रित, वर्णन एवं विश्लेषण करने की सुनियोजित एवं निरंतर प्रक्रिया को आंकलन कहा जाता है।

आंकलन के प्रकार

आंकलन के प्रकार तो ओर भी बहुत से है परन्तु यहां पर केवल तीन प्रकारों का वर्णन किया है।

नैदानिक आंकलन (Diagnostic Assessment)

यह आंकलन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के प्रारम्भ स्तर पर किया जाता है। इसमें छात्र के पूर्व ज्ञान, उसकी खुबियाँ एवं विशेष अधिगम आवश्यकताओं के बारे में समझ सकता है या जानना है। इसमें अध्यापक छात्र के व्यक्तिगत गुणों की समझ, सुधार की योजना एवं कार्यक्रम पर ध्यान देता है।

रचनात्मक आंकलन (Formative Assessment)

यह आंकलन अधिगम प्रक्रिया के साथ लगातार चलने वाला आंकलन है जो उन्नति शील प्रकृति का होता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने व सीखने में आने वाली बाधाओं की प्रतिपुष्टि लेना है। ताकि बाद में

निर्देश देने के साथ–साथ विद्यार्थी के सीखने की प्रक्रिया में सुधार किया जा सके।

योगात्मक आंकलन (Summative Assesment)

इस प्रकार का आंकलन पाठ्यक्रम के अन्त/समाप्त होने पर किया जाता है इसमें विद्यार्थी को यह जानने एवं प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है कि उसने पाठ्यक्रम से क्या सीखा एवं क्या नही सीखा है।

उपचारात्मक शिक्षण

उपचारात्मक शिक्षण का तात्पर्य उस सहायता से है जो अकसर उन बच्चों की दी जाती है जो हम उम्र या कक्षा के अनुसार औसत से कम स्तर पर होते है। कमजोर शिक्षार्थी की पहचान निदानात्मक परीक्षण के आधार पर अलग–अलग की जाती है। अतः इन कमजोरियों/ कठिनाईयों को सुधारने हेतु शिक्षण की व्यवस्था अलग–अलग की जाती है। जिसे उपचारात्मक शिक्षण कहा जाता है।

विद्यार्थी की प्रगति को जांचने के लिए दो क्षेत्रों का विस्तृत आंकलन किया जाता है।

1. शैक्षिक (Scholastic)
2. सह–शैक्षिक (Co-Scholastic)

शैक्षिक आंकलन

इसका तात्पर्य है पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में विद्यार्थी की बुद्धिमता के सभी पहलुओं का आंकलन। विद्यार्थी को विभिन्न विषयों में क्या समझ और ज्ञान है तथा वह किस प्रकार ज्ञान का प्रयोग, विश्लेषण व अपरिचित स्थिति में उपयोग करता है। इससे हमें भी पता चलता है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता 'कहाँ' पर है।

सह–शैक्षिक आंकलन

इसका तात्पर्य है बुद्धि से परे अन्य क्षेत्रों जहां शिक्षार्थी हृदय व भावनाओं का प्रयोग करता है। इसके अन्तर्गत दृष्टिकोण, इन्डोर/आऊटडोर गतिविधियों में भागीदारी का आंकलन होता है। इस प्रकार के क्षेत्र में विद्यार्थियों के जीवन–कौशल, प्रवृति, रूचियाँ, अभिरूचियाँ, मूल्य, सह–पाठ्यक्रम संबंधी एवं शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी गुणों का आंकलन किया जाता है।

ग्रेडिग प्रणाली

इसमें विषयों और शिक्षार्थी को पूर्व निर्धारित मानको के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। ग्रेडिग में शिक्षार्थियों को उनके प्रदर्शन एवं प्रवीणता/ क्षमता के आधार पर कुछ क्षमता समूहों में बांटा जाता है। इसमें कुछ विशिष्ट – प्रतीकों या अंको के एक सैट का उपयोग शामिल है। जिसका संबंध छात्रो, शिक्षकों, अभिभावकों एवं अन्य सभी हितधारकों के लिए स्पष्ट रूप से परिभाषित और समान रूप से समझा जाता है।

निष्कर्ष

शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थी को भावी जीवन के लिए तैयार करना है। सतत एवं व्यापक मूंल्यकान के द्वारा शिक्षा देश के लिए अच्छे नागरिक तैयार करना चाहती है। व कहा भी जाता है। आज के बच्चे कल के राष्ट्र निर्माता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमारी शिक्षा प्रणाली की यह जिम्मेदारी बन जाती है वह अच्छे शिक्षकों के साथ शिक्षण–अधिगम प्रणाली को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया को सावधानी पूर्वक पूरा करे। वर्तमान में निःशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर ध्यान देते हुए उसके महत्वपूर्ण बिन्दु को सही तरीके से शिक्षकों को अवगत करवाते हुए इसके महत्वपूर्ण बिन्दु पर बल दिया जाएं। ताकि शिक्षार्थी का मूल्यांकन करते समय कोई भी महत्वपूर्ण बिन्दु ना छूटे और बच्चों के पूर्ण व्यक्तित्व का विकास किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्रारम्भिक स्तर पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन लागू करने के लिए अध्यापक सदर्शिका, विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा (2013)

दलविन्द्र कुमार एण्ड अनीता देवी (2018), अधिगम आंकलन, निर्मल पब्लिकेशन हाऊस, कुरूक्षेत्र।

अस्थाना विपिन (2017), अधिगम के लिए आंकलन, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

Aggarwal, J.C. (2014), Essentials of Examination System Evaluation, Tests and Measurement, Vikas Publication, Noida.

Bhatia & Jindal (2016), A text book of Curriculum Pedagogy and Evaluation, Paragon International Publisher, New Delhi.

CBSE RTE Continuous and comprehensive Evoluation (CCE) Report (2014)

Evolution in Education ES-333, IGNOU Study Material.

Haryana Govt. Gazzat, (June-3, 2011) Govt. of Haryana

NCERT (2017), Learning outcomes at the elementary state

NCERT (2019), Continuous and Comprehensive Evolution Guidelines